ADAT VINAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Affiliated

57	डॉ. बेवले ए. जे.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी	208 - 212
58	डॉ. मजीद शेख	उदात्त–प्रेम की औपन्यासिक अभिव्यक्ति : बाणभट्ट की आत्मकथा	213 - 221
59	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कविता के बदलते तेवर	222 - 226
60	प्रा.डॉ.शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हिन्दी भाषा और साहित्य	227 - 230
61	प्रा. डॉ. संजय जाधव (पाथीकर)	कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृती वर्णन	231 - 234
62	कु. सुवर्णा जयराम काळे.	हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन	235 - 237
63	सागर गणेश चौधरी	वैश्विक बालसाहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य और मीडिया	238 - 242
64	कुंदन नाना जगताप	गोदान उपन्यास में चित्रित ग्रामीण जीवन	243 - 246
65	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	अनुवाद प्रक्रिया के विविध सोपान	247 - 250
66	प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	251 - 254
67	कु.रेश्मा सुनिल कांबळे	२१ वी सदी की हिंदी गजलों में राजनीतिक विमर्श	255 - 263
68	**प्रा. रामहरी काकडे**	**वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हिंदी नाटक साहित्य**	264 - 266
69	डॉ संतोष नामदेव तांदळे	पोस्ट बॉक्स नं .203, नाला सोपारा	267 - 269
70	डॉ. कुट्टे धनाजी सुभाष	वैश्वीकरण के परिपेक्ष में आदिवासी साहित्य का अस्तित्व	270 - 273
71	डॉ. शिवदत्त ढवळेकर	भूमंडलीकरण के दबाव, किसान जीवन और हिंदी कविता	274 - 286
72	डॉ. भाग्यश्री कोष्टी	वैश्विक स्तर पर हिंदी का स्थान	287 - 289
73	प्रा. डॉ. संजय जाधव	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दामोदर मोरे की हिंदी कविता	290 - 298
74	श्री. संतोष शिंदे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण जन की कहानियाँ	299 - 301
75	सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनूर	वैश्वीकरण के दौर में संचार माध्यम और हिंदी की उपयोगिता	302 - 304

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में कविता के बदलते तेवर

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंन्दी विभाग प्रमुख
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

वैश्वीकरण ने समाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनितिक परिवेश को प्रभावित किया जिससे साहित्य भी अछुता नहिं रहा । वैश्वीकरण से समाज के मुल्य, सभ्यता, रीति–रिवाज, रहन–सहन आचार–विचार और मानवीय संवेदनाओं में अमुलाग्र परिवर्तन हो गया । साहित्य में स्त्री, दलित, अदिवासी, एवं शोषित – वंचित वर्ग को प्रधानता, मिली । स्त्री के आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता अधिकार और आस्तित्व कि चर्चा होनें लगी तो दुसरी और वैश्वीकरण से निर्माण बाजारवाद नें स्त्रीयों को भौतिक बना दिया । स्त्री–मुक्ति स्वर के नामपर स्त्री शोषन, मुक्तयौन संबध, स्त्रीयों का उपभोग आदि विकृतियों ने समाज और साहित्य को ग्रस लिया । साहित्य समाज का दर्पण होता है । वैश्विकरण, उदारीकरण निजीकरण और बाजारवाद नें समाज को विकृत किया और इसी विकृती का बिंब साहित्य में उभरकर आया । वैश्विकरण के कारण भौतिक साधन, सत्ता, अर्थ, उपभोग और स्वार्थ महत्वपुर्ण हो गए और मानवता, संवेदना, प्रेम, और मुल्य निरर्थक हो गए । अर्थ एवं सत्तापिपासु मानसिकताने शोषन, अन्याय, अत्याचार एवं विकृतियों को बढ़ावा दिया । समाज में अनेक विसंगतियोंने और बिडबनाओं ने अपने पैर मजबुत किए । हिन्दी कविता में वैश्विकरण से निर्माण अनेकों विकृतियों को उघाडा गया है ।

वैश्वीकरण के कारण बाजारवाद पनपने लगा जॅहा वस्तु, बाजार, चकाचौंध, बाह्यडांबर, विज्ञापन का मायाजाल, अश्लीलता और अनैतिकता का तांडव, मॉलसंस्कृती, आत्मकेंद्रता, एवं पतित सामाजिक मुल्य पनपने लगे । मनुष्य गौन हो गया और बाजार प्रमुख । भौतिक साधनों के चकाचौध ने और अधिक पाने की लालसा नें संबधो को, भाइचारे को और अपनो को छोड दिया । रिश्ते – नाते बिखर गए, इस वास्तविकता को ' दिलीप कुमार शर्मा ' ने ' घर का बन जाना ' कविता में उघाडा है ।

" एक घर जो मेरे भाई का है ।
एक घर जो मेरे भैया का है ।
और एक घर जो मेरा है ।
मै भाई के घर जा नहिं सकता
अब किसी को पसंद नाहीं
किसी के घर आना–जाना
घर के अंदर घर है । "

अर्थ लोलुप मानसिकताने मनुष्य को अतंत्य विकृत और संकुचित बना दिया है । रिश्ते–नाते गौन बन गए है । अपनापन, प्रेम, समर्पण कि जगह अजनबीपन, अकेलेपन, कुंठा ने ले ली है । घर पारिवारिक सौहार्द, और संवेदनाओं से बनता हैं लेकिन वैश्वीकरण, भौतिकता और आत्मकेंद्रिता ने घर को वस्तुसम बना दिया है ।

भारतीय सभ्यता में नारी को पुजा जाता है । परंतु वैश्विकरण ने बाजारवाद को बढ़ावा दिया जिसका

उद्देश अर्थप्राप्ती, भ्रम, चकाचौध और शोषन हैं । जिसका शिकार नारियॉ बनी । नारी को उपभोक्ता संस्कृती ने उपभोग की वस्तुमात्र बना दिया । लोग अपनी घृणित वासना को पुरा करने के लिए नारियों को अपना शिकार बना रहे है । नौकरी, विज्ञापन, तरक्की, फिल्म प्रवेश के नामपर लडकियों का नाजायज फायदा उठाया जा रहा है । नारियों का शोषन करनेवाले सत्ता, धन, भ्रष्टाचार के सहारे सबकुछ लुटकर बेखौफ घुम रहे है । और स्त्री असाह्य बे सहारा हो लुंठन को फिर सें व्यवस्था के लिए उपलब्ध होती है । कवि ' विष्णु नागर ' के शब्दों में

" उसे बताया गया था कि उसका सबकुछ लुट चुका है
जिसका मतलब ये था कि ए औरत
तेरा लुटेरा पकडा भी गया तो क्या फायदा
लूट का माल तो उससे बरामद होने से रहा
और उसके साथ फिर से ऐसा कुछ हो ।
तो वह प्रतिरोध न करे
क्योंकि जिसका सब कुछ पहले ही लुट–चुका है । "

वैश्वीकरण से पनपे उपभोक्ता संस्कृति, मॉल क्लचर, पब क्लचर, ने मनुष्य को अतंत्य विकृत, घृणित और विक्षिप्त बना दिया हैं । सबकुछ पाने की लालसा ने मनुष्य को मुल्यहिन और चरित्रहिन बना दिया है । भोगप्रधान मानसिकता ने विवाहबाह्य संबध, विवाहपुर्व यौन संबध, अनेकों स्त्री एवं पुरुषों से यौन संबध, घटस्फोट, अविश्वास, आदि अनेको अनैतिकताओं में अपनी जडे मजबुत की है । वर्तमान समाज की विक्षिप्त मानसिकता कों उघाडने वाली 'अष्टभुजा शुक्ल ' की पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं ।

" भारत घोडे पर सवार है
कैसा ललित ललाम यार है
एक हाथ में पेप्सी कोला, दुजे में कंडोम
तीजे में रमपुरिया चाकू चौथे मे हरिओम
कैसा ललित ललाम यार है
भारत घोडे पर सवार है
कहीं बलात्कर हो जाये
चुप रहना नारी जी "

मनुष्य लालसावश दोगला, चापलुस, षडयंत्री, विकृत, वासनांध, भ्रष्ट एवं स्वार्थी बन गया है । शिखर तक पहुँचने के लिए सारे जायज –नाजायज रास्ते अपना रहा है । स्त्री भी सफलता पाने के लिए हॉनी–ट्रॅप का हतकंडा अपना रही है । अश्लिलता, का सहारा लिया जा रहा है । अनेंको विज्ञापन, फिल्में, फोटोशुट, इसके परिचायक है । कयवृध्दी और मुनाफाखोरी मानसिकता नें स्त्रीयों का उपभोग किया और स्त्री – भी इसमें आपत्ती दर्ज नहीं कर रही हैं ।

वैश्वीकरण से उपजी चकाचौंधभरी स्त्री मानसिकता को ' नीलेश रघुवंषी ' ने अपने काव्य में उघाडा है ।

" चमचमाती कार में रंगीन चश्मा, हाथ में मोबाइल
लकदक कपड़ो में नाचती गाती,

खूबसूरत लड़कियॉ झॉझे मे आकर बनती है ।
वे सोचती भी नहीं जिसके बारे में दुरदुरतक
काली सुची में दर्ज है नाम खुबसुरत लडकियों के भीतर
लड़कियों के भी एक सूची
बडी खूबसूरती से धकेला जिसने उन्हें, इस संसार मे ।"

मॉल संस्कृति, बाजार संस्कृति, और पब कल्चर यह सब वैश्वीकरण, नीजिकरण और उदारीकरण की देन हैं जिसके मोह–जाल में मनुष्य फॅसता जा रहा है । इस संस्कृति ने मनुष्य को पतित बना दिया हैं । नग्नता, अश्लिलता, नशाखोरी, शरीरसुख प्रधान मानसिकता, दिखावा प्रधान व्यवहार आदि इसी सभ्यता की देन हैं । महानगरों में युवक – युवती तो इस कल्चर के आदि हो गए हैं । फास्ट –फुड, शराब, सिगरेट, मनोरंजन तो इस कल्चर के हिस्से बन गए है । इसीकारण महानगरों में मॉल की संख्या तीव्रता से बढ़ रही हैं । इस वास्तविकता को ' मॉल में कबूतर ' नानक कविता संग्रह में विनय कुमार ने अभिव्यक्त किया है ।

" जमीन झगड़े की हो
और निर्माता दबंग और रसूखदार
तो फटाफट बनता है मॉल
लगता है अगर
किसी नेता का अकूत काला धनु
तो चकाचक बनता हैं मॉल
इस बनने को बनना कहना
मॉल की तौहीन है जनाब
यह डंडे की तरह खड़ा होता है ।
और झंडे की तरह फहराता है
आप भी गलत हैं भाई साहब
मॉल न बनता है, न खडा होता है
सच तो यह है
कि इसे शहर के सीने पर
ठोक दिया जाता है ।"

बाजारवादी संस्कृति ने लोंगों की मानसिकता को विकृत और संकुचित बना दिया है पुंजीपती,राजनेता और माफियाने बाजारवादी संस्कृति को लोंगो पर थोपने में सफल हो गई है । निरर्थक, एवं अनुपयोगी, वस्तुओं और सभ्यताओं को लोग अपना रहे है । 'शैलैंद्र शर्मा ' के शब्दो में ।

" दो रुपये की कठपुतली है
टेडी बियर हजार का
कसने लगा गले में फंदा
है ग्लोबल व्यापार का

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S ... COLLEGE ... Dist.Nanded

आलू भरे पराठे भुले
नेनू डाल छाछ
पिज्जा–बर्गर अच्छे लगते
कोल्डड्रिंक के साथ "

मुनाफा इस वैश्वीकरण का मूल मन्त्र है । बाजारवाद ने अनीति, ढोग, लुट–खसोट बाहयअडंबर को अपनाकर लोंगो को लुटा है । मनुष्य को बेचैन, अशांत बनाकर उसके खुशियों को बर्बाद किया है । मीडिया, विज्ञापन और मॉल मनुष्य को ठगने के अड्डे बने है । विज्ञापन के सहारे पुँजीपति निरर्थक वस्तुओं का बोझ अवामपर बढा रहे है । विज्ञापन के सहारे पुँजिपति अपने अनुसार लोंगो की निरर्थक वस्तुओंकी क्रय की मानसिकता को विकसित कर रहे है । रोज–मर्रा की जरुरतो को विज्ञापन मीडिया बाजार के व्दारा बढ़ाया जा रहा है युज ॲन्ड थ्रो कल्चर को भी बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक लोगों को लूटा जा सके । मनुष्य – धीरे –धीरे अनावश्यक और अतिरक्त चीजों के बोझ तले दबता जा रहा है । इस वास्तविकता को ' राजेश जोशी ' अतिरिक्त चीजों की माया 'कविता में उघाड़ते है ।

" बाजार से लेने जाता हूँ जरुरत की कोई चीज
तो साथ थमा दी जाती है एक और चीज मुफ्त
उस चीज की कोई जरुरत नहीं मुझे
पर लेने से इंकार नहीं कर पाता उसे
और बस इसी तरह एक पल में
पकड लिया जाता हूँ उस अतिरिक्त के लिए
जरुरत की चीजों के बीच थोडी जगह
बनाता हुं । तो
जल्दी चीजों की जगह थोडी सिकुड जाती है
अतिरिक्त हमारे मन की कमजोरी को पहचानता है ।
लालच धीरे – धीरे पॉव पसारता है ।
एक अतिरिक्त दुसरे अतिरिक्त को बुलाता है ।
और दुसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए जगह बनाता है ।
एक दिन सारी जगह अतिरिक्तों से भर जाती है ।"

भुमंडलीकरण ने अर्थलोलुपता, अमानवीयता, असंवेदनशीलता, क्रुरता, और हिंसा को बढ़ावा दिया हैं । मनुष्य अर्थ, सत्ता, प्रसिदधी और स्वार्थ के लिए रिश्ते–नाते और समाज को कुचल रहा है । उन्हें नोच रहा है । हत्या, बलात्कार, डकैती, आदि घटनायें महानगरों में आम हो गई है । अंधी दौड ने मनुष्य को चरित्रहिन बना दिया है । ' अरुण कमल ' के शब्दों में

" बोलना गुनाह
खॉसना गुनाह
ऑगन में औरतों का हॅसना गुनाह
छुरा भॉजते गुंडे छुट्टा घुम रहे है

और अपने ही घर की चौखट पर बैठा आदमी
मारा जा रहा है ।
सडक पार करते
अचानक किसी बात पर हँसते
कहीं कभी कोई भी कत्ल हो जा सकता है
ऐसा ही वक्त आ गया है ।"

वैश्वीकरण बाजारीकरण, उदारीकरण, नीजिकरण ने जॅहा मानव के लिए अनगिनत सुविधायें दि और मानवी जीवन को सहज बनाया तो दुसरी और अनेकों समस्याओं को भी जन्म दिया अनीति, शोषन, क्रुरता, हिंसा, उपभोग संस्कृति, मॉल एवं पब कल्चर, घटस्फोट का बढ़ता प्रमाण, अनैतिक संबध, कुँवारी मॉताओं में वृध्दी, शरीर सुखप्रधान मानसिकता, पर्यावरण का अती दोहन, प्रेम का विकृत रुप, बलात्कार, बिखरते रिश्ते–नाते, हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, असंवेदनशीलता, विज्ञापन एवं सिनेमा मे बढ़ती नग्नता आदि अनेकों समस्योंऐ वैश्वीकरण से उपजे माहौल में पनपने और बढ़ने लगी । आत्मकेंद्रित मानसिकताने कुंठा, निराशा, अजनबीपन, अकेलापन, अहंकार और स्वार्थ को बढ़ावा दिया । मानव प्रेम एवं संवेदनाओं से कटकर पशूता और यांत्रिकता की ओर बढ़ने लगा । समाज के इन विविध विकृतियों को हिंन्दी कवितामें उघाडने का प्रयास किया है ।

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded